Total No. of Printed Pages—4

2 SEM TDC HINH (CBCS) C 4

2026

(May/June)

HINDI

(Core)

Paper : C–4

[आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद तक)]

Full Marks : 80

Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवनकाल क्या है?

(ख) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' को अपनी रचना 'प्रियप्रवास' पर कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ था?

(ग) मैथिलीशरण गुप्त को किस उपाधि से सम्मानित किया गया था?

(घ) "यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा-स्थल है।" यह कविता पंक्ति किसकी रचना है?

(ङ) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित विरह-काव्य कौन-सा है?

(च) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का बचपन कहाँ बीता था?

(छ) पंत का पूरा नाम लिखिए।

(ज) 'आधुनिक युग की मीरा' किसे कहा गया है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×4=12

(क) 'प्रियप्रवास' की राधा परम्परागत राधा से किस प्रकार भिन्न है?

(ख) मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख तीन रचनाओं के नाम लिखिए।

(ग) निराला की किन-किन रचनाओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य अभिव्यक्त हुआ है? लिखिए।

(घ) काव्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का क्या स्थान है? बताइए।

3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) लाल पुत्र कहि चूमि मुख बिबिध प्रकार खेलाइ।
माता सब कछु पुत्र को सहजहिं सकत दिखाइ।।
सो माता हिन्दी बिना कछु नहिं जानत और।
तासों निज भाषा अहै, सबही की सिरमौर।।

अथवा

दो प्राणी भी ब्रज-अवनि के साथ जो बैठते थे।
तो आने की न मधुवन से बात ही थे चलाते।
पूछा जाता प्रतिथल मिथ व्यग्रता से यही था।
दोनों प्यारे कुँवर अब भी लौट के क्यों न आये।।

(ख) जग में सुख की प्राप्ति के लिए एक सहायक दुःख है।
वही जगाता है सद्गुण को सद्गुण लाता सुख है।
बाधा, विघ्न, विपत्ति, कठिनता जहाँ-जहाँ सुन पाना।
सबके बीच निडर हो जाना दुःख को गले लगाना।।

अथवा

जाओ नाथ! अमृत लाओ तुम, मुझमें मेरा पानी।
चेरी ही मैं बहुत तुम्हारी, मुक्ति तुम्हारी रानी।
प्रिय तुम तपो, सहूँ मैं भरसक, देखू बस हे दानी।
कहाँ तुम्हारी गुण-गाथा में मेरी करुण कहानी।

(ग) सुलाती उन्हें अंक पर अपने
दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने;
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

अथवा

बस गई एक बस्ती है स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र-लोक फैला है जैसे इस नील निलय में।
ये सब स्फुलिंग हैं मेरी इस ज्वालामयी जलन के
कुछ शेष चिह्न हैं केवल मेरे उस महा मिलन के।

(घ) सुनाई किसने पल में आन
कान में मधुमय मोहन तान?
तरी को ले जाओ मँझधार
डूब कर हो जाओगे पार;
विसर्जन ही है कर्णाधार;
वहीं पहुँचा देगा उस पार?

अथवा

छिपा रही थी मुख शशि-बाला
निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड़ में बंदी था अलि,
कोक शोक से दीवाना।।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 7×4=28

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए।

(ख) रामनरेश त्रिपाठी पथिक को क्या संदेश देते हैं?

(ग) मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय भावनाओं पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'संध्या सुंदरी' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) 'जूही की कली' कविता का सारांश लिखिए।

(च) "महादेवी वर्मा मूलतः विरह की गायिका हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

★★★